ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-11, अंक - 41, जनवरी-मार्च 2024

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

प्रकाशक : **विद्यार्थी मंच**

प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. मृत्युंजय पाण्डेय : सुरेंद्रनाथ कॉलेज, कोलकाता

डॉ. विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगबासी कॉलेज

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनोद यादव, विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला एवं परमजीत पंडित

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

कार्यालय प्रभारी

बलराम साव - 8910783904, 03326751686

सम्पादक - 9831497320

प्रबन्ध सम्पादक - 9681105070

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद्

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल

संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070

ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500 रु. डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

06 संस्तुति

आलेख

07 डॉ. राणा प्रताप : कालिदास और निराला के बादल

12 डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल : शरद जोशी की व्यंग्य-रचनाओं में समसामयिक परिवेश और यथार्थ

20 डॉ. विनय कुमार मिश्र : खोर्खे लुई बोर्खेस : जादुई यथार्थवाद के पुरोधा

24 शिखर चंद जैन : चुनौतियों के दौर से गुजरता बाल साहित्य

अनुशीलन

26 पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' : आत्मिक स्पन्दन की गूँजों से भरी गगन गिल की कविता : 'यह आकांक्षा समय नहीं' का सन्दर्भ!

31 सुषमा मुनीन्द्र : राजनारायण बोहरे का उपन्यास अस्थान

34 डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी : साधारण से असाधारण की यात्रा - रामनगीना मौर्य की कहानियाँ

गवेषणा

37 डॉ. अमरनाथ : हिन्दी के यूरोपीय वैयाकरण

44 पूनम सिंह : स्त्री साहित्य - बदलते परिप्रेक्ष्य

विमर्श

48 मयंक : तो क्या साहित्य की विधाओं का अस्तित्व ख़त्म हो रहा है!

संस्मृति

49 सुनीता गुप्ता : साहित्य की संजीवनी थीं उषा किरण खान

52 रंजना अरगड़े : सौन्दर्यात्मक हिंदी और हिंदी का सौन्दर्यः रमेश कुंतल मेघ

समय की शिला पर

54 ख़ुदेजा ख़ान : सहजता से कविता का पाठक तक पहुँचना ही उसकी सफलता है

सरगम के सुर साधे

57 मृत्युंजय श्रीवास्तव मानिक बच्छावत का काव्य-कैनवास

कविता

63 सरिता खोवाला : जीवट संगीत, रेत की नदी, नुकीला समय, भूख की पराकाष्ठा, जादुई यादें

65 तृषान्विता : मेरे जंगल की और एक माँ, समझौता,

66 अभिषेक पाण्डेय : खो चुका है आकाश, निस्संग नहीं होती कविता, घर की अन्तिम इच्छा, वे जो शोषित हैं

68 घुँघरू परमार : प्रार्थना की विधा, इच्छाएं

शो ध स मी क्ष ण | सृ ज न | सं चा र

कहानी

69 मनीष कुमार सिंह : सांझी छत

74 डॉ. कविता विकास : कतरे हुए पंख

77 रजनी शर्मा बस्तरिया: एक तालाब हजार जाल.....

व्यंग्य

82 डा.पंकज साहा : अंतरात्मा की आवाज

भाषांतर

83 मूल लेखकः कवि जय गोस्वामी अधीन 1, अधीन 2, सपने में, वर्षा जैसी
अनुवादक : मंजु श्रीवास्तव आर्द्र बांग्ला भाषा, सीधी बात, पानी की तरह साफ

यात्रा-पर्यटन

85 पूनम सिन्हा : ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयः एक अन्तर्यात्रा

88 अंजना वर्मा : जलप्रपात जो मन तक भिंगा देता है

प्रवासी कलम

92 अरूणा सब्बरवाल : थिरकती धुन

पुस्तकायन

97 डॉ. शशि शर्मा : पानी का पता के बहाने समकालीन समय की शिनाख्त

101 डॉ. मंजुरानी सिंह : गरिमा श्रीवास्तव का उपन्यास 'आउशवित्ज़ एक प्रेम कथा' पढ़ते हुए

शोधार्थी की कलम से

103 मनोहर कुमार कामती : समीक्षा की अवधारणा और कुँवर नारायण

107 ऋतु वर्णवाल : रवि कथा : साहित्यिक गलियारे की एक अनोखी प्रेमकथा

110 दुर्गावती प्रसादः समकालीन हिंदी कवियों की कविता में स्त्री जीवन

116 अरुण कुमार तिवारी : प्रेम और राजनीतिक चेतना के कवि मदन कश्यप : पनसोखा है इन्द्रधनुष

साक्षात्कार

121 मोहन कुमार : नवगीत पर डॉ. शान्ति सुमन से मोहन कुमार का संवाद, डा. मोहन कुमार

गतिविधियाँ

126 विनोद यादव मुक्तांचल पत्रिका ने 10 वर्ष पूरे किए

127 डॉ. मनोज कुमार सिंह राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रतिवेदन

संस्तुति

मुक्तांचल-41 अपने प्रकाशन के दूसरे दशक का आरम्भक अंक है। इस अंक के साथ हम पहले से अधिक दुरुस्त कदम रखने की कोशिश में हैं। पत्रिका के स्वरुप में कोई बड़ा बदलाव नहीं हो रहा है लेकिन लचीलेपन के साथ विविध स्तम्भों में कुछ ताजगी की सिफारिश हो सकती है। आलेख, अनुशीलन, गवेषणा, विमर्श-के साथ-साथ सर्जनात्मक साहित्य के विविध स्वरुपों को भी भरसक समेटने की कोशिश की जाती रही है जो आगामी दिनों में भी जारी रहेगी। कई दशकों से हमारा साहित्य जगत कई तरह के सामाजिक विमर्शों की खदर-बदर से इतना अधिक आक्रान्त रहा है कि साहित्य के अपने मुद्दे कहीं गौण रह गये हैं। मुक्तांचल में कई-कई बार विविध विमर्शों की श्रृंखला को जारी रखने की कोशिश की गई है। हमने लगातार कविता के दो स्तम्भ चलाये हैं 'सरगम के सुर साधे' वरिष्ठ कवियों के द्वारा उनके वक्तव्य एवं परिचय के साथ कुछ अद्यतन कविताएँ तथा 'समय की शिला पर' पच्चीस-तीस वर्षों से लिखने वालों की कविताएँ वक्तव्य एवं परिचय के साथ प्रकाशित की जाती रहीं है। इस बार सरगम के सुर साधे के अन्तर्गत कवि एवं कविता के साथ प्रस्तुतिकार के रूप में तीसरा व्यक्ति भी शामिल है। कलकत्ते के वरिष्ठ कवि मानिक बच्छावत के काव्य-कैनवास को मृत्युंजय श्रीवास्तव ने प्रस्तुत किया है जिसका अन्दाज बड़ा ही अनोखा है जो मन को छूकर ठहर जाता है क्योंकि, मृत्युंजय जी ने कैनवास में परिवेश और व्यक्तित्व को ऐसे गूँथ दिया है कि उसका स्वरुप समावेशी बन गया है जो सूचनाएँ तो बढ़ाता ही है स्मृति के माध्यम से आपसदारी के अंतरंग चित्र भी उकेर देता है।

पत्रिका की अवस्थिति में समेटी गई कहानी, कविता, व्यंग्य, भाषान्तर, साक्षात्कार और प्रवासी कलम भी यहाँ तक कि पर्यटन और पुस्तकायन के साथ गतिविधियाँ भी जो सिर्फ तालिका मात्र नहीं हैं बल्कि अपने कलेवर में साहित्य के विविध आयाम को समेटती हैं।

मुक्तांचल पर बात करते हुए इसके इस वर्ष के विशेष अंकों पर चर्चा कर लेना भी आवश्यक है। 2024 में दो विशेष अंक होंगे प्रथमतः मुक्तांचल - 43 जो डॉ. रमेश कुंतल मेघ के साहित्य संसार पर आलोकपात करेगा। मेघ जी का मुक्तांचल के साथ बड़ा अनन्य संबंध था अतः उनके महत्वपूर्ण आलेख मुक्तांचल को सहज ही प्राप्त हो जाते थे। यह अंक उनकी पुण्यतिथि 4 सितम्बर को स्मृति अंक के रूप में प्रसारित होगा।

मुक्तांचल का इस वर्ष का अन्तिम अंक अर्थात् अंक 44 लोक साहित्य विशेषांक होगा। इस विशेषांक के अतिथि सम्पादक होंगे विशिष्ट व्यंग्यकार, कथाकार एवं आलोचक डॉ. पंकज साहा।

मुक्तांचल के मार्च अंक में प्रायः स्त्री कलम को वरीयता दी जाती रही है। इस बार भी प्रायः विविध स्तम्भों में स्त्री अपनी लेखन की धार के साथ शामिल हैं। विशेष रुप से मैं मित्र पूनम सिंह जी का आभार मानती हूँ जिन्होंने अपनी समस्त असुविधाओं के बावजूद कोलकाता में स्त्री विमर्श पर दिये गये व्याख्यान को मेरे आग्रह पर गवेषणात्मक आलेख का रूप देकर 'स्त्री साहित्य नये परिप्रेक्ष्य' के नाम से भेज दिया। मित्रों का लेखकीय अनुदान मुक्तांचल की थाती है परन्तु मलाल एक ही बात का है कि जिनके खातिर यह सब कुछ हो रहा है वह युवा वर्ग झुण्ड और झण्डे की गफलत में ऐसे घिरे हैं कि उनके सामने धूल और धुंध के सिवा कुछ रह ही नहीं गया है।

संपादक